देव और असुर सोचने लगे कि समाधान अभी भी नहीं मिला। उन्हें मन की शांति नहीं मिल रही थी। तब वह अपने-अपने गुरुओं के पास गए। शुक्राचार्य और बृहस्पति ने उन्हें ब्रज़्हा के पास जाने की सलाह दी। ब्रज़्हाजी ने उन्हें आत्मन विद्या का ज्ञान दिया। वह खुश होकर चल दिए। उन्होंने प्रतिबिज़्ब को आत्म ज्ञान मान लिया। लेकिन उनका यह भ्रम टूट गया। नदी पार करते समय चप्पू से पानी पर पड़ने वाले प्रतिबिज़्ब के मिटने से उन्हें लगा कि ब्रज़्हाजी ने उन्हें सही ज्ञान नहीं दिया। वह वापस गए, कई तरह के प्रश्न किए गए तब उन्हें अहसास हुआ कि असली सुख मन को स्थिर करने से है। उसी से परमवैभव प्राप्त होता है। शरीर की आवश्यकता को पूरा करना हमारा धर्म है। इसके अलावा पुरुषार्थ करने की बात कही गई है। आवश्यकता की पूर्ति के लिए भागदौड़ करते रहना ठीक नहीं है। इच्छा को नियंत्रित करना चाहिए। इसी से मोक्ष की प्राप्ति होती है। सारी दुनिया इस बात को जानती है। इच्छा की पूर्ति कभी नहीं होती। हम परिवार की इच्छापूर्ति के लिए काम करते हैं तो समाज को समय नहीं दे पाते, समाज के लिए करते हैं तो परिवार को नहीं दे पाते। सबकी मर्यादा है। वहीं से व्यज़्तिवाद पैदा हुआ। उस पर समाज का तर्क आया कि व्यज़्ति समाज का एक पुर्जा है। उसकी अपनी कोई इच्छा नहीं होती। उसे समाजहित में ही चलना पड़ता। जब समाज विकास की दिशा में बढ़ता है तो सृष्टि का नाश होता है। इस समय विकास और पर्यावरणवादियों के बीच द्वंद चल रहा है। दुनिया में जैसे कोई विकास की योजना आती है, पर्यावरणवादी आंदोलन शुरू हो जाता है। अब पर्यावरणवादियों की सुनो तो विकास अवरूद्ध होता है और विकास करते हैं तो पर्यावरण को नुकसान होता है। इसमें किसी एक को चुनना ज़्या संभव है। दुनिया ने विकास को पकड़ा और बाकी सब छोड़ दिया। हमारे जीवन का उदेश्य उपभोग के लिए सामर्थवान बनने का हो गया। इसके बाद हमने सृष्टि को कुछ देने के बारे में सोचा। वहां से धर्म की